

Padma Shri



SHRI SIRPI BALASUBRAMANIAM

Shri Sirpi Balasubramaniam widely known by his pen name Sirpi is the Director of Dr. Arutchelvar Mahalingam Translation Institute(AMTI), Pollachi, Tamil Nadu. He is a major Tamil poet with notable contribution to Tamil literature for the past sixty years. He started writing poetry since 1958, and to his credit, he has 24 volumes of Poetry, 18 volumes of critical and research Essays, 9 Volumes of biographies, and 22 volumes of translations. He has edited 55 volumes of works on various subjects. He is one of the founding fathers of Vanambadi movement, creating a new wave of social change in Tamil Poetry.

2. Born on 29th July, 1936 in a remote village of Tamil Nadu, Shri Balasubramaniam holds B.A.(Hons) Degree in Tamil Language and literature with a university Rank in 1956. Joining NGM college, Pollachi in the year 1958 as a lecturer he distinguished himself as a teacher par excellence and taught for 31 years. He was awarded the Ph.D. Degree in Comparative literature by the University of Madras in the year 1987. Poetry became his identification card and it brought him to the National scene.

3. Shri Balasubramaniam was selected to the General Council of Sahitya Akademi in the year 1993-1998. Again in the year 2008 he became the EC member and convener of the Tamil Advisory Board of Sahitya Akademi (2008-2012). For the third time, Sahitya Akademi nominated him to the General council in the category of Eminent Writers of India and he continues to be the member. Hundreds of books (MIL Series, Translations, Papers) in Tamil and from Tamil were published during his tenure in Sahitya Akademi.

4. Shri Balasubramaniam is the recipient of numerous awards and honours, including Tamil Nadu Government Award for his poetical work 'Mouna Mayakkangal' in the year 1982; Paavendhar Award by Tamil Nadu Govt. (1991); Kabilar Award - Kaningar Ko Title by Kundrakudi Adheenam (1992), Ilakkiya Chintanai Award to the epic 'Ramanjuar Kaviyam' (2017) and Tamil Vagai Semmal Award by Madurai Kamarajar University (2019) etc.

पद्म श्री



श्री सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम

श्री सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम सिर्पी उपनाम से सुविख्यात, पोल्लाची, तमिलनाडु स्थित डॉ. अरुतचेल्वर महालिंगम अनुवाद संस्थान (एएमटीआई) के निदेशक हैं। वे एक बड़े तमिल कवि हैं जिन्होंने पिछले 60 वर्षों में तमिल साहित्य में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उन्होंने वर्ष 1958 से कविता लिखना आरंभ किया और 24 काव्य ग्रंथों, 18 आलोचना और अनुसंधान निबंध ग्रंथों, जीवनियों के 9 ग्रंथों और अनुवाद के 22 ग्रंथों की रचना की है। उन्होंने विभिन्न विषयों पर 55 ग्रंथों का संपादन किया है। वह वन्नमवदी आंदोलन, जिसने तमिल काव्य में सामाजिक परिवर्तन की एक नई लहर उत्पन्न की, के संस्थापकों में से एक है।

2. 29 जुलाई, 1936 को तमिलनाडु के एक दूरस्थ गांव में जन्मे, श्री बालसुब्रह्मण्यम ने वर्ष 1956 में विश्वविद्यालय रैंक के साथ तमिल भाषा और साहित्य में बी. ए. (ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त की। वर्ष 1958 में पोल्लाची स्थित एनजीएम महाविद्यालय में व्याख्यता के रूप में पदभार ग्रहण करने के पश्चात उन्होंने स्वयं को एक उत्कृष्ट अध्यापक के रूप में स्थापित किया और 31 वर्ष तक अध्यापन का कार्य किया। उन्हें वर्ष 1987 में मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा तुलनात्मक साहित्य में पी.एचडी की डिग्री से सम्मानित किया गया। कविताएं उनकी पहचान बन गईं और इससे वे राष्ट्रीय फलक पर पहुंचे।

3. श्री बालसुब्रह्मण्यम को वर्ष 1993–1998 में साहित्य अकादमी की जनरल काउंसिल के लिए चुना गया, पुनः वर्ष 2008 में वह साहित्य अकादमी के तमिल सलाहकार बोर्ड के कार्यकारी परिषद के सदस्य और संयोजक बने (2008–2012)। साहित्य अकादमी में तीसरी बार उन्हें भारत के प्रतिष्ठित लेखकों की श्रेणी में जनरल काउंसिल के लिए नामित किया और अब भी उसके सदस्य बने हुए हैं। साहित्य अकादमी में उनके कार्यकाल के दौरान तमिल में और तमिल से अनुदित सैकड़ों पुस्तकें (एमआईएल श्रृंखला, अनुवाद, पत्र) प्रकाशित की गईं।

4. श्री बालसुब्रह्मण्यम को विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया है, इनमें उनकी काव्य रचना मौना मयक्कंगल के लिए वर्ष 1982 में तमिलनाडु सरकार सम्मान; तमिलनाडु सरकार द्वारा पावेंधर सम्मान (1991); काबिलर पुरस्कार – कुंद्राकुडी अधीनम द्वारा कलिंगर को सम्मान (1992); महाकाव्य 'रामनजुआर कवियम' के लिए इलक्किया चिंतानई पुरस्कार (2017) और मदुरै कामराजर विश्वविद्यालय द्वारा तमिल वागई सेमल पुरस्कार (2019) आदि शामिल हैं।